शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir अक्टूबर २०१७, संस्करण २३

प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव ! सिद्ध मार्ग ई-पत्रिका का बाईसवाँ अंक प्रस्तुत है । इस अंक में महामण्ड लेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा कुछ समय पूर्व शान्ति मन्दिर मगोद में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत हैं ।

श्रीगुरुदेव

सभी का बड़े प्रेम और सम्मान से हार्दिक स्वागत !

तुलनात्मक दृष्टि से कभी सोचता हूँ कि संसार उत्तम है या आश्रम? देखा जाए तो समास्याएँ दोनों तरफ हैं किन्तु संसार को देखा जाए तो पूरे दिन की भाग दौड़ में जीवन यापन करते लोग, विचार करने में असमर्थ लोग, अध्यात्म से दूर लोग, जैसे आये थे वैसे ही चलें जाएँगे वो लोग,क्या कभी आश्रम की दिनचर्या के प्रारूप को अपनाएँगे ? और दूसरी तरफ देखा जाए तो आश्रम की दिनचर्या में प्रातः से लेकर पूरे दिन मन्त्र उच्चारण होना, उनका हम लोगों के द्वारा सुना जाना ये किसी आशीर्वाद या कृपा के बिना

आश्रम की दिनचर्या में प्रातः से लेकर पूरे दिन मन्त्र उच्चारण होना, उनका हम लोगों के द्वारा सुना जाना ये किसी आशीर्वाद या कृपा के बिना सम्भव नहीं है ।

लक्ष्य ये नहीं है कि इस दुनिया को अच्छा बनाकर छोड़ें अपने बच्चों के लिए परन्तु अच्छे बच्चे बनाएँ इस दुनिया के लिए ।

सम्भव नहीं है । सत्संग, संकीर्तन, भजनों के द्वारा जीवन को सार्थक बनाना । कुछ बातों को लेकर अगर हम जीतें है तो हमारा जीवन बहुत बढ़िया चलेगा । किसी ने लिखा है कि लक्ष्य ये नहीं है कि इस दुनिया को अच्छा बनाकर छोड़ें अपने बच्चों के लिए, परन्तु अच्छे बच्चे बनाएँ इस दुनिया के लिए, तो हमारा जो प्रयास है वो इस उद्देश्य के लिए होना चाहिए कि हम अच्छा बनें । अच्छा बनना इतना आसान नहीं है, दुनिया हमको अच्छा रहने नहीं देती है । हमारी जितनी भी गतिविधियाँ हैं वे इसी प्रयास में हैं कि समाज को कैसे अच्छा बनाया जाए? उसको धर्मोक्त कर्म में कैसे संलिप्त किया जाए क्योंकि अगर मनुष्य धर्म का पालन करता है तो उससे धर्म आगे बढ़ता है, धर्म की रक्षा होती है और शास्त्रों में कहा गया है कि धर्मो रक्षति रक्षितः अर्थात धर्म का पालन करने वाले की धर्म रक्षा करता है । उसके लिए हमें निश्चय करना पड़ेगा कि हमको अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहना है । किसी ने लिखा है कि जब मेहनत करने के बाद भी सपने पूरे न हों तो रास्ते बदल दो अर्थात जिस ढंग से तुम कर्म कर रहे हो उस ढंग को बदल दो किन्तु अपने सिद्धान्तों को मत बदलो । महापुरुषों से मिला हुआ सिद्धान्त है इसको अपने अन्दर पचाओ और उस पर अमल करो । पेड़ भी अपने पत्ते बदलते हैं, जड़ नहीं, मूल नहीं बदलते । अगर प्रकृति से हम कुछ सीखें तो बहुत कुछ सीख सकते हैं । मैं यही कहना चाहूँगा कि हम अपने गुरु से, बड़े से, इस तरह जुड़े रहें कि वह कहीं भी हो हम हमेशा ही उनका साथ महसूस करें । वो कभी हमे छोड़ते नहीं हैं हमेशा हमारे बारे में ही सोचते रहते हैं, विचार करते रहते हैं, कमी हमारी है कि हम उनके लिए नहीं सोचते हैं । उनसे प्रेम करो, अपना समझो । बस हम प्रार्थना करते रहें, भक्ति करते रहें, माँगने की आवश्यकता नहीं है । यदि वो आन्तर्यामी हैं तो वो जानते हैं तुम्हारी आवश्यकताओं के बारे में तो तुम्हें क्या

प्रभु भी, सद्गुरु भी समय-समय पर हमारी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं क्योंकि हमसे ज्यादा उनको पता है कि हमें क्या जरूरत है, हमारे लिए क्या उचित है ।

जरूरत है अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करने की? ठीक माँ कि तरह वह हमारा पालन करता है किन्तु एक बार तुम अपने अन्दर ये भाव लाओ तो सही की वो ही मेरे माता-पिता हैं, वो ही पालन करने वाले हैं तो जैसे एक माँ अपने बच्चे का ख्याल रखती है समय-समय पर उसको क्या आवश्यकता है उसको पूरा करती है और पालन करती है तो प्रभु भी, सद्गुरु भी समय-समय पर हमारी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं क्योंकि हमसे ज्यादा उनको पता है कि हमें क्या जरूरत है, हमारे लिए क्या उचित है । हम चाहते तो हैं कि ये भाव हमारे अन्दर आयें लेकिन हम कहीं न कहीं अपने अहं में रह जाते हैं और अहंकाररूपी वह शत्रु हमारे अन्दर ये भाव लाने नहीं देता है । समर्पण भाव तब ही आएगा जब पूर्णरूप से निरहंकार होकर सद्गुरु के समीप रहेंगे । गुरुगीता में भी आता है निर्लज्जो गुरुसन्निधौ अर्थात गुरु की सन्निधि में निर्लज्ज होकर उपस्थित हो, वह सन्निधि चाहे कैसी भी हो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष । गीता में आया है कि उद्धरेत् आत्म आत्मानम्- इसके दो अर्थ लगाये जायें तो एक अर्थ से हमें अपना उद्धार स्वयं करना है, दूसरा कि हम अपने आप को पूर्णरूप से समर्पण भाव से, निरहंकार होकर किसी महापुरुष की शरण में जाएँ । दो अर्थ इसलिए कि गीता में बात स्वार्थ की की गयी अर्थात अपना उद्धार करने के लिए हमें स्वयं ही परिश्रम करना होगा । न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः अर्थात सोते हुए सिंह के मुँह में स्वयं मृग प्रवेश नहीं करता उसे भी परिश्रम करना पड़ेगा । स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि पवित्रता,धैर्य,प्रयत्न इनके द्वारा सारी बाधाएँ दूर हो जाती हैं । पवित्रता अर्थात अपने विचारों में, अपनी वाणी में , अपने कर्म में पवित्रता लानी है । अध्यात्म में स्वयं को पचाना इतना सरल नहीं है इसके लिए धैर्य की बहुत जरूरत है क्योंकि धैर्य नहीं

सबसे पहले अपने अन्दर धैर्य, विश्वास, श्रद्धा का पोषण करो । कीर्तन, भजन में मन को लगाओ ।

होगा तो तुम चंचल रहोगे फिर तुम्हरा मन वहाँ से हटने को कहेगा इसलिए सबसे पहले अपने अन्दर धैर्य, विश्वास, श्रद्धा का पोषण करो । कीर्तन, भजन में मन को लगाओ । सदा ही उस चिदानन्द प्रभु का ध्यान करो तब कहीं जाकर तुम्हारे हृदय में अध्यात्म का दीपक जलेगा । सदा ही प्रयत्नशील रहना है । बाबा जी एक कहानी सुनाया करते थे कि एक नदी के किनारे एक साधु जी आते हैं और वहीं एक धोबी कपड़े धुल रहा होता है तो थोड़ी देर बाद धोबी साधु से कहता है कि मैं अभी आता हूँ तब तक आप मेरे गधे का ख्याल रखना। साधु अपनी साधना में लीन रहता है, ध्यान नहीं देता है इतने में उसका गधा कहीं चला जाता है । धोबी आता है देखता है साधु तो है लेकिन गधा नहीं तो वह गुस्सा होकर स्वामी से लड़ने लग जाता है । दोनों एक दूसरे को मारने लग जाते हैं तभी साधु प्रभु को याद करता है और इतने में उसका गधा वापस आ जाता है । धोबी अपना गधा लेकर चला जाता है तभी साधु भगवान से कहता है प्रभु आपने मुझे बचाया नहीं, आप आये नहीं । भगवान कहते हैं मैं आया तो था परन्तु मुझे ये पता नहीं चला कि दोनों में साधु कौन और धोबी कौन है क्योंकि दोनों ही एक दूसरे को मारने में लगे हुए थे, दोनों का व्यवहार एक जैसा था । मैं मानता हूँ कि नकल करने की कोई आवश्यकता नहीं है वो ऐसा है तो मैं भी वैसा ही बनूँ ये सब करने की आवश्यकता नहीं है । अंग्रेजी में कहते हैं Be yourself, everyone else is already taken जैसा प्रभु ने तुम्हें बनाया है वैसे ही बनो क्योंकि उन्होंने दूसरों को भी बनाया है लेकिन दूसरी तरह से, उनका व्यवहार, स्वभाव इत्यादि एक दूसरे से भिन्न है । किसी ने कहा है कि जब

प्रभु ने हमें हाथ दिए तो सन्त कहते है कि इन हाथों के द्वारा दान करो सिर्फ़ लेना ही मत सीखो

मनुष्य दूसरों के प्रति भलाई करना बन्द कर देता है तो सामजिक और आध्यत्मिक मृत्यु हो जाती है । एक भजन में आता है हाथ दिए कर दान रे.....अर्थात भगवान ने हमें कुछ भी व्यर्थ में नहीं दिया है सभी का कुछ न कुछ प्रयोजन है । प्रभु ने हमें हाथ दिए तो सन्त कहते है कि इन हाथों के द्वारा दान करो सिर्फ़ लेना ही मत सीखो । अपना जो है वह आएगा जितना भी अपना नहीं है उसको उतनी ही उमंग से जाने दो । हमें अपने मन में निश्चय करना पड़ेगा कि जो हमारा नहीं है वो सर्वथा त्याज्य है । इसके लिए अपना हृदय बुद्धि और विचारों को विशाल बनाओ । हमें सर्वदा ही कर्मरत रहना चाहिए हालांकि मनुष्य कुछ न कुछ करता रहता है लेकिन कर्म भी सुकर्म हों जिससे हमें और दूसरों को कोई हानि न हो । सद्मार्ग पर चलते हुए निरन्तर प्रयास में लगे रहना चाहिए । कर्मलीनता सीखनी है तो चींटी से सीखो वह अपने से बड़े चावल के टुकड़े को उठाकर जब दीवार पर चढ़ती है, चढ़ते हुए चावल का कण नीचे गिर जाता है वह फिर नीचे आती है और निरन्तर प्रयास में लगी रहती है कि कैसे भी वह चावल के कण को लेकर ऊपर चढ़ जाए । तो हमें भी यही सीख लेनी है कि कैसे भी हो अच्छे कर्म करने का निरन्तर प्रयास करें । अपने अन्दर रोज एक नयी उमंग लेकर उठो और लग जाओ अपने नित्यकर्म में । जीवन में होने वाले नित्य कर्म में स्थिरता लाओ क्योंकि चंचलता बहुत परेशान करती है, एक जगह हमको टिकने नहीं देती । जैसे उबलते हुए पानी में अपना प्रतिबिम्ब नहीं दीखता है वैसे ही जब मनुष्य क्रोध में होता है तो सच्चाई को नहीं अपनाता है क्योंकि उसमें उसकी भी सच्चाई छुपी होती है । इसलिए स्थिरता

हमारे भाग्य में जितना उस परमात्मा ने लिख दिया है उतना ही प्राप्त होगा चाहे कितना भी भाग लो कितना भी कमा लो ।

होनी बहुत जरूरी है । पता नहीं क्यों लोगों को लगता है कि जितने दौड़ लेंगे उतना प्राप्त कर लेंगे परन्तु मैं कहता हूँ हमारे भाग्य में जितना उस परमात्मा ने लिख दिया है उतना ही प्राप्त होगा चाहे कितना भी भाग लो, कितना भी कमा लो । उस प्रभु ने तुमको बनाया है तो तुम्हारे कुछ अधिकार भी निश्चित किए गये होंगे । जिन पर तुम्हारा अधिकार निश्चित है उतना तो तुम्हें प्राप्त होगा ही फिर क्यों ना जीवन में धैर्य रखा जाए, स्थिरता बनाई जाए । सद्गुरु पर, अपने इष्ट पर विश्वास, श्रद्धा को दृढ़ किया जाए । सबसे पहले हमारे नित्यकर्म में स्तब्धता आनी चाहिए Stillness in Action अपने व्यवहार में, अपनी बातचीत में और इसके लिए आपको अपने आप से अभ्यास करना पड़ेगा । स्वयं में निश्चित कर लो कि थोड़ा समय लगेगा किन्तु मैं अपने कार्य को पूर्ण स्थिरता से अच्छे से करूँगा तब कहीं जाकर तुम में परिवर्तन होगा । हालांकि ऐसा करना सरल नहीं है क्योंकि मन हमारा ऐसा होने नहीं देगा, वो चाहेगा कि जल्दी से कार्य को कर के कहीं घूमने जाया जाए या थोड़ा विश्राम कर लिया जाए उसके बाद कार्य पूरा कर लेंगे किन्तु तुम्हें पूर्ण लगन से अपने कार्य को सिद्ध करना पड़ेगा । योजनाबद्ध जीवन जियो, धैर्य रखो, विचलित मत हो । हम मनुष्य हैं हम में और पशु में यही तो अन्तर होता है कि हम विचारशील हैं हम अपनी बुद्धि द्वारा विकल्प को चुन सकते हैं । पशु को तो जो दे दो वही खा लेगा, वो यह नहीं कहेगा कि ये अच्छा नहीं बना है या उसमें कोई गलती निकालेगा । हम विचारवान मनुष्य भी अगर यही करते हैं तो हममें और पशुओं में कोई भेद नहीं है । कोई पशु अगर

अगर रात हुई है तो दिन भी होगा, बुरे दिन हैं तो अच्छे दिन भी आयेंगे ।

नदी में जा रहा है किन्तु उसे पता नहीं है कि नदी कितनी गहरी है परन्तु हमको तो पता है कि क्या सत्य है और क्या असत्य फिर भी हम जीवन में गलतियाँ करते हैं । इसलिए मैं कहता हूँ कि जीवन जीना है तो योजनाबद्ध जियो । जैसी भी परिस्थिति है जीवन में उसे स्वीकार करो और धैर्य रखो सब बदल जाता है । अगर रात हुई है तो दिन भी होगा, बुरे दिन हैं तो अच्छे दिन भी आयेंगे । सकारात्मक सोच रखो, सोचो कि बुरे दिन आये ही इसलिए हैं कि तुम अच्छे दिन की अहमियत समझ सको, क्योंकि मुफ़्त मिला हुआ किसी को पचता नहीं है । परिश्रम से कमाया हुआ रुपया और इधर उधर से आया हुआ रुपया में बहुत अन्तर होता है । यदि मेहनत से पैसा कमाया है तो आप उसकी कीमत जानते हो और यदि ऐसे ही कहीं से पैसा मिल जाए तो आप सोचोगे कि अरे ये तो फालतू है कहीं घूमने में, कहीं व्यर्थ कार्य में लगा दोगे । उसका दुरुपयोग करोगे और उसका परिणाम तुम्हारे लिए ही हानिकर होगा । प्रत्येक मानव का मन पहले नकारात्मक शक्ति को ग्रहण करता है लेकिन जो व्यक्ति सकारात्मक सोच रखता है वह उस विचार को अलग ढंग से सोचता है और उसको सकारात्मक रूप से समाज में रखता है । स्वयं को ऐसी सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत करो कि नकारात्मकता को भी सकारात्मकता से विचार करने पर मन को विवश कर दो और ये सब अभ्यास से, साधना से ही सम्भव है । तुम चाहो कि पशुओं की तरह जीवन जीकर हम अपने अन्दर सकारात्मकता ले आएँ ये सम्भव नहीं है । इसके लिए अपना कर्म, अपना पुरुषार्थ, अपना प्रयत्न करते रहो ।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय